



PO-001-0014114

Seat No. \_\_\_\_\_

**B. A. (Sem. IV) (CBCS) Examination**

September – 2020

**Sanskrit : Paper - 8 (Elective - 2)**

*(Mruchhkatikam : Shudrak)*

*(Old Course)*

**Faculty Code : 001**

**Subject Code : 0014114**

Time : 2½ Hours]

[Total Marks : 70

- |                  |   |    |
|------------------|---|----|
| १                | शुद्रकना जवन उपर विस्तृत नोध लपो.   | १४ |
| 1                | Write critical note in detail on live of the 'शुद्रक'.                        | 14 |
| <b>अथवा / OR</b> |   |    |
| १                | 'मृच्छकटिकम्'ना नवभा सर्गानुं रसदर्शन करावो.                                  | १४ |
| 1                | Critically appreciate the 9 <sup>th</sup> Act of 'मृच्छकटिकम्'.               | 14 |
| २                | संस्कृत नाट्यक्षेत्रे शुद्रकनां प्रदाननी यर्था करो.                           | १४ |
| 2                | Critically examine the contribution of शुद्रक to the field of Sanskrit Drama. | 14 |
| <b>अथवा / OR</b> |   |    |
| २                | 'मृच्छकटिकम्'ने आधारे वसन्तसेनानुं पात्रालेखन करो.                            | १४ |
| 2                | Draw character sketch of 'वसन्तसेना' with reference to 'मृच्छकटिकम्'.         | 14 |

- ३ 'मृच्छकटिकम्'भां व्यक्तं थतो सभाज वरुषीवो. १४
- 3 Describe a society reflected in 'मृच्छकटिकम्'. 14

अथवा / OR

- ३ 'मृच्छकटिकम्'ने आधारे चारुदत्तनुं पात्रालेखन करो. १४
- 3 Draw character sketch of चारुदत्त with reference to 'मृच्छकटिकम्'. 14

- ४ (अ) नीचेनाभांथी कोरु पशु बे श्लोकोनो अनुवाद करो : ८
- 4 (a) Translate any two of the following verses : 8

(१) भाग्यानि मे यदि तदा मम कोऽपराधो  
यद्वन्यनाग इव संयमितोऽस्मि तेन ।  
दैवी च सिद्धिरपि लङ्घयितुं न शक्या  
गम्यो नृपो वलवता सह को विरोधः ॥

(२) करिकरसमबाहु सिंहपीनोन्नतांसः  
पृथुतरसम वक्षास्ताम्रलोलायताक्षः ।  
कथमिदमशमानं प्राप्त एवंविधो यो  
वहति निगऽमेकं पादलग्नं महात्मा ॥

(३) यश्यन्ति मां दशदिशो वनदेवताश्च  
चन्द्रश्च दीप्तकिरणश्च दिवाकरोऽयम् ।  
धर्मानिलौ च गगनं च तथान्तरात्मा  
भूमिस्तथा सुकृतदुष्कृत साक्षिभूता ॥

(४) शास्त्रज्ञः कपटानुसारकुशलो वक्ता न च क्रोधन  
स्तुल्यो मित्रपरस्वकेषु चरितं दृष्टवैव दत्तोतरः ।  
क्लीबान्यालयिता शठान्यथयिता धर्म्यो न लोभान्वितो  
द्वर्भावे परतत्त्वबद्धहृदयो राज्ञश्च कोपापह ॥

- (ब) नीचेनाभांथी कोरु ढश डे संदरु सडरत सडरतु : ॡ
- (b) Explain with reference to context any two of the following : 6
- (१) न केवलं रूपं शीलामपि तर्कयामि ।
- (२) ढश्येयुः क्षरतुडतयो हल चारदृषुतया ।
- (३) वलषडड इनुदुरडचौरा हरनुतल चररसंचरतं धरुडडु ।
- (ॡ) ँव डनुषुडसुड वलडतुतलकाले छरदुरेषुवनरुथर डहुलीडवनुतल ।
- ॡ नीचेनाभांथी कोरु ढश डे डर टूंकनुंध लडुु : १ॡ
- 5 Write short notes on any two of the following : 14
- (१) डैतुरेडुः ।
- (२) डृकुुडकटलके डैतुरी वलचाररः ।
- (३) वलदूषकसुड डरतुररलेखनडु ।
- (ॡ) 'डृकुुडकटलकडु' - शीरुषक.
- (4) Title 'डृकुुडकटलकडु'.
-